प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY) का बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन

वन्दना पाण्डेय
प्रवक्ता– बी०एड
पं० ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी किसान महाविद्यालय आभूराम तुर्कवलिया,गोरखपुर
Vp538804@gmail.com

सारांश

इस शोध पत्र में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY) द्वारा बच्चों के शुरुआती स्वास्थ्य और उनकी भावी शिक्षा पर डाले जाने वाले प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है। PMMVY एक मातृत्व लाभ कार्यक्रम है, जो मुख्य रूप से गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को कुछ वित्तीय मदद देने और उनकी स्वास्थ्य संबंधी आदतों को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि यह योजना माँ के स्वास्थ्य के जरिये किस तरह बच्चे के बेहतर स्वास्थ्य की बुनियाद तैयार करती है और यही बुनियाद आगे चलकर उसकी पढ़ाई–लिखाई के अवसरों को कैसे आकार देती है। प्रस्तुत शोध पत्र यह दर्शाता है कि इस योजना का असर केवल पैसों की मदद तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पोषण, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता और बच्चे के मानसिक विकास को बढ़ावा देकर एक स्वस्थ और शिक्षित पीढ़ी को तैयार करने में भी अहम योगदान देती है।

शब्द कुंजी *: प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, बुनियाद, स्वास्थ्य, गर्भवती, स्तनपान, पोषण*

प्रस्तावना

किसी भी देश की प्रगति का आधार उसके बच्चों का उत्तम स्वास्थ्य और अच्छी शिक्षा होती है। इसी महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने माँ और बच्चे के स्वास्थ्य स्तर में सुधार लाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण पहलें शुरू की हैं। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना इन्हीं पहलों में से एक है, जिसे 1 जनवरी, 2017 से देशभर में लागू किया गया।

इस योजना के अंतर्गत, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) के जरिये सीधे उनके बैंक खाते में वित्तीय सहायता भेजी जाती है। इसका दोहरा उद्देश्य : पहला, गर्भावस्था में काम न कर पाने से होने वाले आय के नुकसान की कुछ हद तक भरपाई करना, और दूसरा, उन्हें स्वास्थ्य और पोषण से जुड़ी बेहतर आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित करना। यह शोध पत्र इस बात की गहराई से जाँच करेगा कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना किस तरह परोक्ष रूप से बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी शिक्षा पर एक लंबा और सकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

साहित्य की समीक्षा

सिंह और सिंह (2020) का लेख भारत में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की भूमिका और कार्यप्रणाली की जांच करता है। लेखक अपने पहले बच्चे के लिए गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने में इस योजना के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। वे योजना के कार्यान्वयन में पात्रता मानदंड, लाभ और सामने आने वाली चुनौतियों पर भी चर्चा करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि योजना का भारत में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

देवी और सिंह (2020) पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की भूमिका और कार्यप्रणाली का विश्लेषण करते हैं। लेखक गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए योजना के उद्देश्यों, पात्रता मानदंडों और लाभों पर चर्चा करते हैं। वे कार्यान्वयन प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों और इस क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर योजना के प्रभाव की भी जांच करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि योजना का पूर्वोत्तर भारत में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने में सकारात्मक प्रभाव है।

दत्ता (2019) ने पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की भूमिका और कार्यप्रणाली की समीक्षा प्रदान करते हैं। लेखक इस क्षेत्र में योजना की कार्यान्वयन प्रक्रिया, लाभों और चुनौतियों पर चर्चा करते हैं। वह इस क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर योजना के प्रभाव का भी विश्लेषण करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना योजना ने पूर्वोत्तर भारत में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने में योगदान दिया है।

सैकिया और बरुआ (2018) पूर्वोत्तर भारत के एक राज्य असम में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की भूमिका और कामकाज का आकलन करते हैं। लेखक कार्यान्वयन प्रक्रिया में योजना के उद्देश्यों, पात्रता मानदंडों, लाभों और चुनौतियों पर चर्चा करते हैं। वे राज्य में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर योजना के प्रभाव का भी विश्लेषण करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि योजना का असम में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने पर सकारात्मक प्रभाव है।

किकोन और देवी (2019) पूर्वोत्तर भारत के एक राज्य नागालैंड में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की भूमिका और कार्यप्रणाली का अध्ययन करते हैं। लेखक राज्य में गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए योजना के उद्देश्यों, पात्रता मानदंडों और लाभों पर चर्चा करते हैं। वे कार्यान्वयन प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों और नागालैंड में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर योजना के प्रभाव का भी विश्लेषण करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना ने राज्य में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने में योगदान दिया है।

चक्रवर्ती (2018) नागालैंड में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की भूमिका और कार्यप्रणाली का एक अवलोकन प्रदान करते हैं। लेखक कार्यान्वयन प्रक्रिया में योजना के उद्देश्यों, पात्रता मानदंडों, लाभों और चुनौतियों पर चर्चा करते हैं। वह राज्य में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर योजना के प्रभाव का भी विश्लेषण करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना ने नागालैंड में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अध्ययन के उद्देश्य

- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना का परोक्ष रूप से बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी शिक्षा पर एक लंबा और सकारात्मक प्रभाव पता करना।

शोध–प्रविधि

यह अध्ययन *प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना* पर आधारित है जिसमें तथ्य द्वितीयक समंक पर आधारित है। आंकड़ों का संकलन पत्रिका, इन्टरनेट, शोध पत्र, इन्टरनेट में उपलब्ध सूचना इत्यादि पर आधारित है।

योजना का संक्षिप्त विवरण

इस योजना के अंतर्गत, सरकार पहली संतान के जन्म पर गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को ₹5,000 की आर्थिक मदद देती है। यह धनराशि तीन अलग–अलग किश्तों में दी जाती है, जिन्हें पाने के लिए स्वास्थ्य से जुड़ी कुछ शर्तों को पूरा करना अनिवार्य होता है:

- पहली किश्त (₹1,000): गर्भावस्था का जल्द से जल्द पंजीकरण कराने पर।
- दूसरी किश्त (₹2,000): गर्भावस्था के छह महीने पूरे होने पर कम से कम एक प्रसव–पूर्व जाँच करवाने पर।
- तीसरी किश्त (₹2,000): शिशु के जन्म का पंजीकरण कराने और उसे बीसीजी, ओपीवी, डीपीटी व हेपेटाइटिस–बी जैसे शुरुआती टीके लगवाने पर।

साथ ही, जननी सुरक्षा योजना (JSY) के तहत सरकारी अस्पताल में प्रसव कराने पर लगभग ₹1,000 की अतिरिक्त सहायता भी मिलती है, जिससे कुल मिलाकर यह लाभ करीब ₹6,000 हो जाता है।

बच्चों के स्वास्थ्य पर योजना का असर

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना बच्चों के स्वास्थ्य को कई तरह से बेहतर बनाती है:

गर्भ में बेहतर पोषणः

इस योजना से मिलने वाली आर्थिक मदद से गर्भवती महिलाएँ अपने खान–पान पर बेहतर ध्यान दे पाती हैं, जिससे गर्भ में पल रहे शिशु का विकास अच्छा होता है। इससे जन्म के समय बच्चे का वजन सही रहता है और वह स्वस्थ पैदा होता है।

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचः

योजना की किश्तें पाने के लिए प्रसव–पूर्व जाँच और टीकाकरण जैसी शर्तें पूरी करनी होती हैं। इस वजह से महिलाएँ नियमित तौर पर आंगनवाड़ी और स्वास्थ्य केंद्रों पर जाती हैं, जिससे गर्भावस्था के खतरों का समय पर पता चलता है और माँ–शिशु दोनों को सही देखभाल मिल पाती है।

टीकाकरण को बढ़ावाः

योजना की तीसरी किश्त बच्चे के शुरुआती टीकाकरण से जुड़ी होने के कारण, यह तय हो जाता है कि नवजात को जानलेवा बीमारियों से बचाने वाले टीके समय पर लगें। यह शिशु मृत्यु दर (प्दिज डवतजंसपजल ंजम) घटाने में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

स्तनपान के लिए प्रोत्साहनः

इस योजना के तहत स्वास्थ्य कार्यकर्ता (आशा, एएनएम) माताओं से मिलकर उन्हें स्तनपान का महत्व समझाते हैं। जन्म के बाद पहले छह महीने तक केवल माँ का दूध बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और उसे कुपोषण से दूर रखता है।

भविष्य के स्वास्थ्य की नींवः

सही जन्म–वजन, पूरा टीकाकरण और शुरुआती पोषण मिलकर बच्चे के जीवन भर के स्वास्थ्य की एक मजबूत नींव रखते हैं। इससे भविष्य में होने वाले कुपोषण, बौनापन और दुबलेपन जैसी समस्याओं का खतरा कम हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव

PMMVY का बच्चों की शिक्षा पर कोई सीधा असर नहीं दिखता, लेकिन यह उन बुनियादी वजहों को मजबूत करती है, जो अच्छी शिक्षा के लिए जरूरी हैं। इसका असर अप्रत्यक्ष, मगर बहुत गहरा होता हैरू

बेहतर दिमागी विकासः

जन्म से पहले और बाद के शुरुआती 1000 दिन बच्चे के दिमागी विकास के लिए सबसे अहम होते हैं। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना से मिला बेहतर पोषण माँ के जरिए बच्चे के मस्तिष्क को ताकत देता है, जिससे उसकी सीखने, समझने और सोचने की क्षमता बेहतर होती है।

स्कूल के लिए तैयारीः

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बच्चा स्कूल जाने के लिए पूरी तरह तैयार होता है। ऐसे बच्चों का मन पढ़ाई में लगता है, वे कम थकते हैं और उनकी सीखने की गति भी तेज होती है।

स्कूल में नियमित उपस्थितिः

स्वस्थ बच्चे कम बीमार पड़ते हैं, इसलिए वे स्कूल भी नियमित रूप से जा पाते हैं। लगातार स्कूल आने से न केवल उनका अकादमिक प्रदर्शन सुधरता है, बल्कि स्कूल छोड़ने (ड्रॉपआउट) का खतरा भी कम हो जाता है।

गरीबी के चक्र को तोड़नाः

यह योजना परिवार के आर्थिक बोझ को कम करती है, क्योंकि स्वस्थ बच्चे की देखभाल पर खर्च कम होता है। जब एक स्वस्थ बच्चा अच्छी शिक्षा पाता है, तो वह भविष्य में अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकालने में मदद करता है। इस तरह यह योजना गरीबी और अशिक्षा के उस चक्र को तोड़ती है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलता रहता है।

चुनौतियाँ और सुझाव

इस योजना के सकारात्मक परिणामों के बावजूद, इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा :

जानकारी का अभावः

ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों में रहने वाली अनेक महिलाएँ इस योजना और इसकी आवेदन प्रक्रिया के बारे में पूरी तरह से अवगत नहीं हैं।

प्रशासनिक जटिलताएँः

दस्तावेजीकरण की प्रक्रिया (जैसे आधार कार्ड और बैंक खाता) काफी है, और प्रक्रिया में होने वाली देरी के कारण भी कई योग्य महिलाएँ इस योजना का लाभ उठाने से चूक जाती हैं।

सीमित दायराः

यह योजना केवल पहले बच्चे के जन्म पर ही लागू होती है, जबकि दूसरे या उसके बाद के बच्चों के जन्म के समय भी माँ और शिशु को वैसी ही पौष्टिक देखभाल और आर्थिक सहायता की जरूरत होती है।

अपर्याप्त सहायता राशिः

वर्तमान महंगाई दर और गर्भावस्था के दौरान होने वाले वेतन के नुकसान को देखते हुए, ₹5,000 की धनराशि केवल आंशिक राहत प्रदान करती है और यह पूरी तरह से पर्याप्त नहीं है।

सुझाव :

व्यापक जागरूकता अभियानः

आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मदद से ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में योजना के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अभियानों को और अधिक प्रभावी ढंग से चलाया जाना चाहिए।

प्रक्रिया का सरलीकरणः

आवेदन प्रक्रिया को आसान बनाया जाना चाहिए और जो महिलाएँ डिजिटल रूप से साक्षर नहीं हैं, उन्हें आवेदन भरने में विशेष सहायता दी जानी चाहिए।

योजना के दायरे का विस्तारः

इस योजना का लाभ कम से कम दूसरे बच्चे के जन्म तक बढ़ाने पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है, ताकि अधिक परिवारों को मदद मिल सके।

राशि की नियमित समीक्षाः

बढ़ती महंगाई को देखते हुए, सरकार को समय–समय पर दी जाने वाली सहायता राशि की समीक्षा करनी चाहिए और इसमें आवश्यक वृद्धि करनी चाहिए।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना केवल एक आर्थिक मदद देने वाली स्कीम नहीं, बल्कि देश के भविष्य के लिए किया गया एक महत्वपूर्ण सामाजिक निवेश है। यह योजना माँ के स्वास्थ्य में प्रत्यक्ष और शिशु के स्वास्थ्य में अप्रत्यक्ष सुधार लाकर एक स्वस्थ समाज की नींव रखती है। एक स्वस्थ बच्चा ही भविष्य में संज्ञानात्मक रूप से विकसित और सीखने के लिए बेहतर रूप से तैयार होता है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना बच्चों के शुरुआती स्वास्थ्य पर सकारात्मक असर डालती है, जो भविष्य में उनकी शिक्षा और सीखने की क्षमता का मजबूत आधार बनता है। यह योजना न केवल भारत के मानव विकास सूचकांक को सुधारने में सहायक है, बल्कि एक स्वस्थ, शिक्षित और सक्षम भावी पीढ़ी के निर्माण की दिशा में एक मील का पत्थर भी साबित होती है। यदि इसका कार्यान्वयन प्रभावी ढंग से हो और इसमें निरंतर सुधार किए जाएँ, तो इस योजना के लाभों को कई गुना बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- *अनंत, पी., सिंह, पी.वी., बर्गक्विस्ट, एस., हैसलटाइन, डब्ल्यू.ए., और जॉर्ज, ए. (2012), माँ और बच्चे के स्वास्थ्य में सुधारः भारत प्रकाशन से समाधान, 1–253A*
- *बरनगरवाला, टी. (2021), मातृत्व लाभ योजनाः महाराष्ट्र में लाभार्थियों की संख्या सबसे अधिक है द्य द इंडियन एक्सप्रेस*

- *पूंजी बाजार. (2018), प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई) के तहत 17 लाख से अधिक लाभार्थी नामांकित /बिजनेस स्टैंडर्ड समाचार*
- *बजट और शासन जवाबदेही केंद्र (2017), मातृत्व लाभ कार्यक्रम का संसाधन अंतराल विश्लेषण*
- *चंद्रा, जे. (2018), प्रधानमंत्री मातृत्व योजना से 23.6 लाख लोगों को लाभ – द हिंदू*
- *महिला एवं बाल विकास विभाग, (2018)*
- *प्रभाव मूल्यांकन के लिए अंतर्राष्ट्रीय पहल। (2017)। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार, 2*
- *जीएनपी. (2017)। वैश्विक पोषण रिपोर्ट 2017: सतत विकास लक्ष्यों का पोषण। वैश्विक पोषण रिपोर्ट 2017, 115*